भारतीय चित्रकला में पौराणिक सन्दर्भो की रचनाशीलता

डा० नमिता त्यागी
असिस्टेंट प्रोफेसर, ड्राइंग एवं पेन्टिंग विभाग
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा
ईमेलः natyagi09@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डा० नमिता त्यागी

भारतीय चित्रकला में पौराणिक सन्दर्भो की रचनाशीलता

Artistic Narration 2021, Vol. XII, No. 2, Article No. 23 pp. 134-144

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-2-july-dec.-2021/

सारांश

भारतीय कला का सूक्ष्म पहलू धर्म व आध्यात्मक के समन्वय से उत्प्रेरित रहा है। धर्म और आध्यात्म की इन अमूर्त भावनाओं और रहस्यों को भारतीय कला में रचनात्मकता के साथ मूर्त रूप प्रदान किया गया है जो भारतीय संस्कृति के जीवन तत्वों को उद्घाटित करते हैं।

सभी प्राचीन पौराणिक परम्पराएँ जैसे–मिस्र, भारतीय, चीनी, इसाई एवं मध्य ऐशिया इस प्रकार की संयुक्त आकृतियों को स्वीकार करती है। मतस्य कन्या, नाग देवता, पंखों युक्त नर एवं नारी आकृतियाँ, ड्रैगन, पंखदार घोड़े, घोड़े के घड़ के साथ मानवाकृति एवं अन्य अनेक संयुक्त आकृतियाँ हमें सभी सभ्यताओं में प्राप्त होती हैं।

भारतीय चित्रकला में यह संयुक्त आकृतियाँ हमें प्रगैतिहासिक कालीन शिलाचित्रों में भी प्राप्त होते हैं। पुराणों में भगवान विश्णु के दस अवतार वर्णित हैं जिनमें मतस्य, कूर्म, वाहर एवं नरसिंह की आकृति संयुक्त आकृतियों के रूप में वर्णित है एवं लघु चित्रण में इन्हें चित्रित भी किया गया है। लघु चित्रण परमपरा में हमें 'शरभ' की आकृति भी प्राप्त होती है। पुराणों में 'शरभ' को शिव अवतार के रूप में माना है तथा शिव पुराण में 'शरभ' को हजार हाथों वाला, शेर मुख, परंव युक्त एवं आठ पैरों वाली आकृति के रूप में वर्णित किया गया है।

मध्यकालीन लघु चित्रण शैली में एक अन्य प्रकार की मिश्रित आकृतियों का भी निरूपण हुआ है जो न तो धार्मिकता से जुड़ी हैं और न ही पौराणिक सन्दर्भो को स्पर्श करती है। इन आकृतियों में पशु आकृतियों अथवा नर एवं नारी आकृतियों को मिश्रित करके एक विलक्षण आकार की संरचना की गयी। यह आकृतियाँ किसी परम्परा अथवा संस्कृति की द्योतक

नहीं है, अपितु कलाकारों की कल्पनाशीलता एवं नवीन अविष्कारों की द्योतक है। इन आकारों में अधिकतर हाथी, शेर, ऊँट एवं नारी आकृति को निरूपित किया गया है जिन्हें 'पशु कूंजर' अथवा 'नारी कूंजर' के नाम से जाना गया।

इस प्रकार के चित्रों को अंकित करने का क्या उद्देश्य रहा होगा यह अनभिज्ञ है किन्तु विचार करें तो शायद, इस प्रकार की कृतियाँ प्रकृति एवं मनुष्य के सामन्जस्य को प्रदर्शित करती है अथवा इस प्राकृतिक संसार पर ईश्वर की सत्ता को प्रकट करती है कि संसार के सभी प्राणियों की शक्तियाँ एवं सामान्जस्य ईश्वर के अन्तर में समाहित है।

मुख्य शब्द

लघु चित्रण, संयुक्त आकृतियाँ , अमूर्त ,मूर्त पौराणिक ,'पशु कूंजर', 'नारी कूंजर'

भारतीय कला की यह प्रधान विशेषता रही है कि वह आध्यात्मिक व धार्मिक रही है। कला का सूक्ष्म पहलू धर्म व आध यात्मक के समन्वय से उत्प्रेरित रहा है। धर्म और आध्यात्म की इन अमूर्त भावनाओं और रहस्यों को भारतीय कला में रचनात्मकता के साथ मूर्त रूप प्रदान किया गया है जो भारतीय संस्कृति के जीवन तत्वों को उद्घाटित करते हैं।

यह धार्मिक संवेदनाएँ भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत करती हैं। कलाकार सदैव भारतीय संस्कृति के इन कल्याणकारी मूल्यों को अपने कलारूपों में प्रकट करते आये हैं। इन्हीं परम्पराओं के अन्तर्गत भारतीय चित्रण की विभिन्न शैलियों में भी पौराणिक विषयों पर ऐसी आकृतियों का अंकन हुआ है, जो मानवाकृति एवं पशु आकृति के मिश्रित रूपों द्वारा निर्मित है। ये कहीं–कहीं विरूपता को भी प्राप्त होती है परन्तु अपनी भावभिव्यक्ति में पूर्णता समर्थ हैं।

सभी प्राचीन पौराणिक परम्पराएँ जैसे–मिस्र, भारतीय, चीनी, इसाई एवं मध्य एशिया इस प्रकार की संयुक्त आकृतियों को स्वीकार करती है। मतस्य कन्या, नाग देवता, पंखों युक्त नर एवं नारी आकृतियाँ, ड्रैगन, पंखदार घोड़े, घोड़े के घड़ के साथ मानवाकृति एवं अन्य अनेक संयुक्त आकृतियाँ हमें सभी सभ्यताओं में प्राप्त होती हैं। इन आकृतियों को हम दो भागों में वर्गीकृत कर सकते हैं, पहली वह जो पौराणिक सन्दर्भो पर आधारित है, दूसरी वह जो अविष्कारी एवं कलाकार की कल्पना पर आधारित है।

इन चित्रों का अंकन पौराणिक कथाओं के किन्हीं प्रकरण पर आधारित होता है अथवा स्वतन्त्र रूप से भी इन्हें चित्रित किया गया।

संयुक्त आकृतियों के निरूपण कि यह परम्परा भारतीय चित्रकला में अति प्राचीन रूप में विद्यमान है। कराबाद, भोपाल स्थित शैलाश्रयों में हमें इस प्रकार की आकृति का अंकन प्राप्त होता है, जिसमें मनुश्य आकृति के धड़ पर पशु का सिर चित्रित किया गया है।

सिन्धु घाटी सभ्यता को हम प्रारम्भिक शहरी सभ्यता के रूप में जानते है जहाँ वास्तु कला, चित्रकला, मूर्तिकला, पात्र निर्माण, बहुमूल्य आभूशण एवं व्यापारिक लेन–देन के अवशेष प्राप्त होते है। विकसित शहरी सभ्यता के सानिध्य में कला पूर्ण अवशेशों के रूप में कुछ मोहरें भी प्राप्त होती है जो अपने व्यापारिक उद्देश्य के साथ–साथ कला जगत में महत्वपूर्ण स्थान

रखती है। यह मोहरें आकार में अत्यन्त छोटी है परन्तु कलात्मक रूप से इन छोटी आकार की मोहरों पर अनेक आकृतियाँ खोद कर अथवा सांचें में ढाल कर निर्मित की गयी है। सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त विभिन्न मोहरों पर भी हमें मिश्रित आकृतियाँ प्राप्त होती हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि यह अवधारणा अति प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में विद्यमान है।

मौर्य कालीन कला की थाती स्तम्भों, गुफाओं, राजप्रसादों, स्तूप एवं तोरण द्वारों के रूप में विश्व में विख्यात है। मौर्य कालीन स्तूपों में भारत की सांस्कृतिक, धार्मिक व सामाजिक चेतनता का प्रदर्शन मौर्य काल के कलापूर्ण वैभव को प्रत्यक्ष प्रमाणित करता है। मौर्य कालीन कला में हमें संयुक्त आकृतियों की इस विशिष्ट अवधारणा का निरूपण प्राप्त होता है जिससे पूर्ण रूप से भारतीय संस्कृति की इस अवधारणा को प्रकट किया गया है कि संसार के प्रत्येक जीवित प्राणी में जीवन रूपी तत्व की एकता है। इसे कलाकारों ने अपनी सृजनात्मक क्षमता से भरहुत एवं सांची के कला मूर्तनों में प्रकट किया है। विभिन्न पशुओं की आकृतियों को एक आकृति में गूथ कर एक विशिष्ट आकृति का मूर्तन इस अवधारणा का सफल निरूपण है।

भारतीय चित्रकला की अभूतपूर्व कृतियाँ 7वीं शती से लघु चित्रण के रूप में संग्रहीत है। लघु रूप में प्रस्तुत इन चित्रों में संसार भर की विविध सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता समाहित है। यह चित्र लघु होते हुए भी अपनी अभिव्यक्ति में अत्यन्त विस्तार समेटे है। लघु चित्रों की यह परम्परा जो अपने स्थान विशेश की विशेशताओं, उनके विस्तार, अध्यात्मिकता,

ब्रह्माणीय दृष्टिकोण, दैवीय आदर्श एवं उसकी मान्यताओं को प्रस्तुत करने का सामर्थ रखती है। लघु शैली के यह चित्र अपने रचनात्मक प्रयत्नों, विचारों एवं दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं। लघु चित्रों की इस परम्परागत शैली की विषय वस्तु का विस्तार भी अनन्त है जहाँ हमें सांसारिक, लौकिक, वेदांग, साहित्य, ब्रह्मांण, संगीत, लोक परम्पराएँ, सामाजिक जीवन, राज दरबार, रनिवास, ग्राम्य जीवन, वन, प्राकषतिक सुशभा सम्बन्धी चित्रों का विशाल संग्रह देखने को मिलता है। संगीत की राग–रागनियाँ, तन्त्र–मन्त्र और योग जैसी अमूर्त विचारधाराएँ भी इस शैली में भावयुक्त रूप पाती है, जो इसके कलाकारों की अद्‌भुत क्षमता की परिचायक है। भारतीय लघुचित्रण शैली में भी मिश्रित आकृतियों का अंकन कलाकारों ने अत्यन्त रचनात्मकता के साथ किया है, जिसमें विभिन्न पशुओं को मिलाकर एक पशु आकृति को निर्मित किया गया है जिसे ''पशु कूंजर'' व ''नव कूंजर'' के रूप में जाना गया। ''नव कूंजर'' में नौ पशुओं को मिश्रित रूप में चित्रित किया गया है।

पुराणों में भगवान विश्णु के दस अवतार वर्णित हैं जिनमें मतस्य, कूर्म, वाहर एवं नरसिंह की आकृति संयुक्त आकृतियों के रूप में वर्णित है एवं लघु चित्रण में इन्हें चित्रित भी किया गया है। अवतारों की कल्पना प्राचीन ग्रन्थों में एक रक्षक के रूप में की गयी है, जब जब धरती पर अत्याचार अथवा विनाशकारी शक्तियाँ प्रबल होंगी उनका सामना करने के लिये भगवान स्वयं अवतार रूप में प्रस्तुत होंगे।

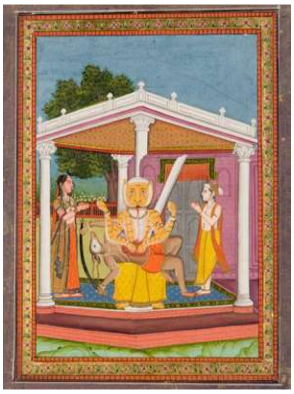

नरसिंह अवतार जयपुर शैली, 1825– 1875

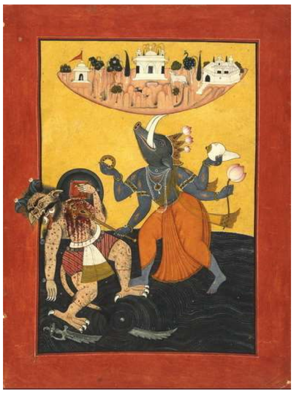

वारह अवतार, चम्बा शैली, 1740

कूर्म अवतार कांगडा शैली,

विष्णु के इन सभी रूपों में एक रक्षक की धारणा है, जिसमें मतस्य रूप धारण करके उन्होंने राजा मनु के माध्यम से विश्व में आने वाली भयंकर से रक्षा की। कूर्म का रूप धारण करके उन्होंने समुद्र मन्थन के समय देवताओं की रक्षा की तथा पर्वत को अपनी पीठ पर साध ा रखा। वाराह अवतार धारण करके उन्होंने हिरण्यकक्ष से पृथ्वी को बचाया एवं नरसिंह अवतार

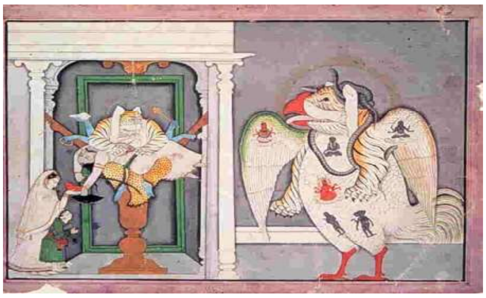

ले कर हिरण्यकशिपु का वध किया जिसे ब्रह्मा द्वारा यह वरदान प्राप्त था कि वह इस संसार में किसी भी नर, पक्षु, अथवा शस्त्र द्वारा नहीं मारा जा सकेगा। इन सभी रूपों का अंकन लघु चित्रण शैली में गरिमापूर्ण रूप में प्रस्तुत किया है। जिनमें नर एवं पशु–आकषति को मिश्रित करके, व्यवस्थित संयोजन के रूप में चित्रित किया गया है। कलाकारों के रचनात्मक कौशल एवं सष्जनात्मक क्षमता से इन आकारों से सम्पूर्ण कथा का सार–चित्रों के माध्यम से परिलक्षित होता है जो अत्यन्त प्रेरणास्पद एवं कलात्मक है।

लघु चित्रण परमपरा में हमें 'शरभ' की आकृति भी प्राप्त होती है। संस्कृत साहित्य के अनुसार– 'शरभ' मूल रूप से पहाड़ों, जंगलों में रहने वाला पशु है जो गरजता है एवं अन्य पशु उससे भयभीत होते हैं अर्थात् वह एक योद्धा के रूप में सादृश्यता प्रस्तुत करता है। महाभारत में शरभ को एक विशाल एवं विलक्षण प्राणी के रूप में वर्णित किया है, जिसके आठ पैर है, जंगल में रहता है एवं कच्चे माँस का भक्षण करता है। रामायण में भी 'शरभ' का वर्णन है जिसमें उसे बन्दरों के राजा के रूप में माना है। पुराणों में 'शरभ' को शिव अवतार के रूप में माना है तथा शिव पुराण में 'शरभ' को हजार हाथों वाला, शेर मुख, पंरव युक्त एवं आठ पैरों वाली आकृति के रूप में वर्णित किया गया है। इस प्रकार 'शरभ' को अपने–अपने धार्मिक विश्वासों के अनुसार प्रस्तुत किया गया किन्तु सभी में शरभ को एक विशालाकार अत्यन्त शक्तिशाली पक्षु मिश्रित पक्षी के रूप में माना गया है

और इसी रूप में लघु चित्रों में अंकित भी किया गया है। इस चित्र में हिरण्यकश्यपु के वध की कथा का अंकन अत्यन्त स्वाभाविक एवं संयोजित रूप से किया गया है जिसमें 'शरभ' की आकृति चित्रित है व दूसरी ओर नरसिंह द्वारा हिरण्यकश्यप का वध किया जा रहा है।

भारतीय महाकाव्य महाभारत मं 'नवकूंजर' का वर्णन प्राप्त होता है। कथानुसार एक बार जब अर्जुन पहाड़ों पर तपस्या में रत्त थे तब उनकी तपस्या से प्रसन्न हो भगवान कृष्ण ने अपने विश्वरूप का दर्शन दिया प्रारम्भ में अर्जुन उस रूप को देखकर अपने धनुष बाण साध कर खड़े हो जाते हैं परन्तु शीघ्र ही वह उन्हें पहचान जाते हैं एवं अपना धनुष बाण समर्पित कर देते हैं। लघु चित्रण शैली में इस दृश्य के अंकन में कृष्ण के विश्वरूप को प्रकट

शरभ, नरसिम्हा, कांगडा शैली

करने हेतु 'नवकूंजर' नौ आकृतियों के संयुक्त रूप से निर्मित है जो एक पशु आकृति के रूप में संयोजित है, जिसमें इनका सिर मुर्ग का है जो तीन पैरों पर खड़ा है, एक पैर हाथी का, चीते का एवं एक हिरन का है, चौथा हाथ के रूप में ऊपर उठा है जो श्याम रंग का है एवं जिसमें पुष्प पकड़ा हुआ है। आकषति की गर्दन मोर की एवं कूबड बैल का है एवं पूँछ के रूप में नाग चित्रित है।

इस आकृति के समक्ष अर्जुन को हाथ जोड़े चित्रित किया गया है। भारतीय संस्कृति की गरिमापूर्ण परम्परा का चित्रण सम्पूर्ण भाव सम्मत है, कृष्ण के रूप को पहचान कर अर्जुन नतमस्तक एवं श्रद्धान्वित भाव से पूर्ण है।

मध्यकालीन लघु चित्रण शैली में एक अन्य प्रकार की मिश्रित आकृतियों का भी निरूपण हुआ है जो न तो धार्मिकता से जुड़ी हैं और न ही पौराणिक सन्दर्भो को स्पर्श करती है। इन आकृतियों में पशु आकृतियों अथवा नर एवं नारी आकृतियों को मिश्रित करके एक विलक्षण आकार की संरचना की गयी। यह आकृतियाँ किसी परम्परा अथवा संस्कृति की द्योतक नहीं है, अपितु कलाकारों की कल्पनाशीलता एवं नवीन अविष्कारों की द्योतक है। इन आकारों में अधिकतर हाथी, शेर, ऊँट एवं नारी आकृति को निरूपित किया गया है जिन्हें 'पशु कूंजर' अथवा 'नारी कूंजर' के नाम से जाना गया।

इस प्रकार के चित्रों को अंकित करने का क्या उद्देश्य रहा होगा यह अनभिज्ञ है किन्तु विचार करें तो शायद, इस प्रकार की कृतियाँ प्रकृति एवं मनुष्य के सामन्जस्य को प्रदर्शित करती है अथवा इस प्राकृतिक संसार पर ईश्वर की सत्ता को प्रकट करती है कि संसार के सभी प्राणियों की शक्तियाँ एवं सामान्जस्य ईश्वर के अन्तर में समाहित है।

मानव एवं प्रकृति में युग्मता का सिद्धान्त व संयुक्त आकृतियों की संकल्पना सभ्यता का एक महत्वपूर्ण अंग है। भारतीय पौराणिक गाथाओं में इस विचारधारा का प्रबल समर्थन मिलता है। प्राचीन ग्रीक एवं मिस्र की सभ्यताओं में भी बहुत सी ऐसी पौराणिक गाथाएँ व दृश्यात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं जो इस विचारधारा की द्योतक है। चीनी सभ्यता में भी यिन–यान का सिद्धान्त भी युग्मता की अवधारणा को प्रदर्शित करता है।

भारतीय लघु चित्रण शैली, लोक कलाओं, जनजातीय कलाओं तथा आधुनिक कला में भी पौराणिक संयुक्त आकृतियों की अवधारणाओं का निरूपण रचनात्मक रूपों में प्राप्त होता है। जन जीवन का अभिन्न अंग ये लोक कलाएँ भी हमारी संस्कृति की अनमोल धरोहर है। सहज अमूर्तन, सरल रेखाकंन, रेखीय रूपाकार और उनकी लयात्मकता, कलात्मक अलंकरण, उपयोगिता व छन्द तत्वों से परिपूर्ण लोक कलाएँ केवल हस्त शिल्पों में ही न प्रकट होकर

संयोजित चित्र रूपों में प्रकट हुई है। इन विशेषताओं को प्रकट करने हेतु यह आवश्यक है कि चित्र संयोजन की दृष्टि से इतने समक्ष हो कि वे संस्कृति के गूंढ अर्थो को अपने रूपाकारों में प्रकट कर सकें। यह चित्रित आकृतियाँ अपने संयोजनों में विशिष्ट है एवं अपने विशेष स्वभाव को प्रस्तुत करती है। यह आकृतियाँ पौराणिक कथानकों से सम्बन्धित है जो अपने संयोजनों में सम्पूर्ण कथानक के भाव को प्रस्तुत करती है। भारतीय लोक कला एवं जन जातीय कला भारत के सामाजिक नियमों के साथ–साथ जीवन एवं मृत्यु की दार्शनिक विचारधारा को अपने रूपाकारों में प्रकट करती है। उच्च गुणवत्ता लिये यह महान कलाएँ किसी भी समुदाय के ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य को प्रकट करतीं हैं।

भारतीय लोक कला परम्परा में बंगाल का एक विशिष्ट स्थान रहा है। बंगाल की लोक कला परम्परा में काली घाट पट चित्रों का विशेष महत्व है। यह चित्र कला के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते है। प्रारम्भ में यह चित्र धार्मिकता से जुड़े हुए थे जिनमें हिन्दु देवी–देवता व पौराणिक कथाओं से सम्बन्धित चित्रों की प्रमुखता थी। संयुक्त आकृतियों के निरूपण में इन कलाकारों ने भी अपनी रचनात्मक क्षमता से अद्भुद संयोजन प्रस्तुत किये है। जल रंगों में चित्रित यह संयोजन रेखात्मक विशेषताओं से युक्त है, विरोधी रंग योजना संयोजन को आकर्षण प्रदान करती है जो इन चित्रों का मुख्य ध्येये था क्योंकि यह चित्र जन साधारण के विक्रय हेतु निर्मित किये जाते थे। आकृतियों का सरलीकरण व मोटी गतिपूर्ण रेखाएँ सम्पूर्ण संयोजन को लयबद्ध करती है। काली घाट चित्रों में इस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रभाव स्वरूप संयोजनों के स्थान व्यवस्था में परिवर्तन दिखाई देता है जहाँ लोक कलाकार सम्पूर्ण पृष्ठभूमि को चित्रित करता था वहाँ इन चित्रों में पृष्ठ भूमि सादा तथा मुख्य चित्र को अधिक महत्व प्रदान किया गया है।

Narasimha

मधुबनी लोक चित्रों का संसार बिहार राज्य के मधुबनी जिले से सम्बन्धित है जो कलात्मक सज्जा तथा रंगों के प्रयोग से भरी हुई है। भारतीय लोक कला भारत के सामाजिक नियमों के साथ–साथ जीवन एवं मृत्यु की दार्शनिक विचारधारा को अपने रूपाकारों में प्रकट करती है।

भारतीय लोक कला भारत के सामाजिक नियमों के साथ–साथ जीवन एवं मृत्यु की दार्शनिक विचारधारा को अपने रूपाकारों में प्रकट करती है। इनके द्वारा निर्मित कलाकृतियाँ युद्धों की महान गाथाओं का स्मरण दिलाती हैं, विवाहोत्सव, तीज त्यौहार, प्रेम एवं अन्य वह सभी परम्पराएँ जो भारतीय संस्कृति को विशिष्टता प्रदान करती हैं। उच्च गुणवत्ता लिये यह महान कलाएँ किसी भी

समुदाय के एक एतिहासिक परिप्रेक्ष्य को प्रकट करतीं हैं। मिथिला लोक शैली के माध्यम से धार्मिक और सामाजिक प्रसंगों को अधिक दिखाया गया है।

मधुबनी शैली, बिहार में चित्रित यह चित्र अर्धनारीशवर एवं कूर्म अवतार का है सम–सन्तुलन में संयोजित यह चित्र लोक विश्वासों की सुन्दर अभिव्यक्ति है। तेज चटक रंगों में संतुलन, व रेखाओं का अद्‌भुत संतुलन मधुबनी चित्र संयोजनों में विशेष दृश्ट्व्य होता है। यह चित्र सजावटी रूपरेखा, रंगों से परिपूर्ण होने के साथ–साथ शिव–पार्वती एवं विष्णु अवतार के रूपों को एकीकृत कर सन्तुलित संयोजन प्रस्तुत करता है।

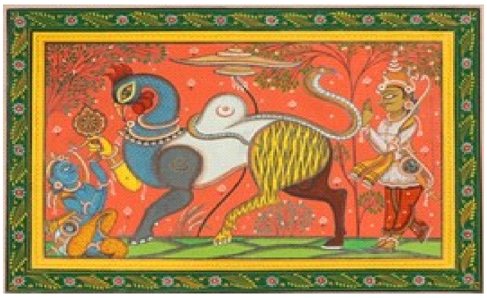

ओडीशा के पट चित्रों का योगदान भी लोक कला में अविस्मरणीय हैं। यहाँ चित्र आकृतियाँ भी हिन्दु पौराणिक कथाओं तथा मुख्य रूप से जगन्नाथ एवं वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं। इन कलाकारों ने भी संयुक्त आकृति की अवधारणा को प्रभावपूर्ण संयोजनों में प्रस्तुत किया है। भारतीय महाकाव्य में नवकूंजर का वर्णन प्राप्त होता है, लोक शैली में चित्रित यह चित्र कृष्ण के विराट स्वरूप की व्याख्या करता है।

पट चित्रण परमपरा में हमें 'शरभ' की आकृति भी प्राप्त होती है। इस चित्र में हिरण्यकश्यपु के वध की कथा का अंकन अत्यन्त स्वाभाविक एवं संयोजित रूप से किया गया है जिसमें 'शरभ' की आकृति चित्रित है।

आन्ध्र प्रदेश की कलात्मक चित्रकारी कलमकारी लगभग तीन हजार साल पुरानी कला के रूप में आज भी जीवित है तथा विश्वविख्यात है। इसमें भी हिन्दु पौराणिक कथाएँ, महाकाव्य,

गीता और पुराणों के महान संदेशों को अपने संयोजनों में जीवित किया है। पुराणों में भगवान विष्णु के दस अवतार वर्णित है। अवतारों की कल्पना प्राचीन ग्रन्थों में एक रक्षक के रूप में की गयी है, जब जब धरती पर अत्याचार अथवा विनाशकारी शक्तियाँ प्रबल होंगी उनका सामना करने के लिये भगवान स्वयं अवतार रूप में प्रस्तुत होंगे। विष्णु के इन सभी रूपों में एक रक्षक की धारणा है, जिनमें से मतस्य, कूर्म, वारह एवं नरसिंह अवतार की आकृतियाँ संयुक्तआकारों रूप से संयोजित है। इस शैली में भी इन आकुतियों को चित्रित किया गया है।

जनजातीय कलाओं में संयुक्त आकृतियों की अवधारणा का निरूपण भी प्राप्त है। यह संयुक्त आकृतियाँ पशु एवं मनुष्य मिश्रित आकृति, नर एवं नारी मिश्रित आकृति एवं विभिन्न पशुओं की मिश्रित आकृतियों के रूप में संयोजित की गयी है, जो अपनी अभिव्यक्ति में पूर्णता समर्थ है। जनजातीय लोक कला की सुन्दर अभिव्यक्ति हमें गौंड चित्रकला में प्राप्त होती है। आकारों का सरलीकृत रूप, डिजाइन की विशेषता तथा स्थान योजना सभी कुछ आधुनिक विचारधारा से उत्प्रेरित है, विशय प्रकृति से सम्बन्धित व जन जीवन को जोड़ते हुए प्रदर्शित है जिसमें संयुक्त आकृतियों का निरूपण भी हुआ है। यह दो रूपों में है एक पौराणिक कथाओं में संदर्भित दूसरा काल्पनिक रूपों से सम्बन्धित। जनजातीय लोक कला प्रकृति के प्रति अति संवेदनशीलता रही है। सम्पूर्ण जनजातीय लोक कलाकार एवं प्रकृति इस कलात्मक अभिव्यक्ति एक दूसरे में गुथे हुए से प्रतीत होते हैं जो इस कला के अस्तित्व का आवश्यक अंग है।

यह प्रकृति को पूर्ण आत्मिक भावुकता के साथ प्रस्तुत करते हैं। गौड़ जनजातीय कलाकार अपने चित्रों में पशु आकारों को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं जैसे कोई अपने बच्चों से प्रेम प्रदर्शित करता है। आकर्षक रंग योजना, पशुओं की अभिव्यक्ति में अक्रामकता न होकर एक शान्त विचार प्रकट होते हैं। इन आकृतियों को एक दूसरे के ऊपर बनाना तथा मिश्रित पशु आकृतियों की अभिव्यंजना भी इस कला में प्रदर्शित है। गौड़, कला में इन रूपों की अभिव्यक्ति अत्यन्त सरल रूपाकारों को प्रदर्शित करती है।

मिश्रित पशु आकृति,गौड़ व भील

इन संयुक्त आकृतियों का निरूपण भारतीय समकालीन कलाकारों ने भी रूचिपूर्ण रूप में किया है। भारतीय पौराणिक कथाओं के इन सूक्ष्मतम् मूल्यों को जो भारतीय सामाजिक परिप्रेक्ष्य

में अपनी अहम भूमिका रखते है, का चित्रण अनेकानेक आधुनिक कलाकारों ने कर इन रहस्यों को जन मानस तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

जिसमें ए. रामाचन्द्रन वह मुख्य कलाकार है जिन्होंने भारतीय पौराणिक मूल्यों के विभिन्न तथ्यों को अपनी कलाकृतियों में प्रदर्शित किया है। उच्चःश्रैवा सात मुहँ वाला पंखयुक्त एक उच्चकोटी का अश्व है जो इन्द के वाहन स्वरूप समुन्द, मन्थन के समय प्राप्त हुआ था जो दैवीय शक्तियों से युक्त है और अश्वों के समूह का राजा नियुक्त है। ए. रामाचन्द्रन की आकस्फोर्ड नामक सीरीज में उच्चःश्रैवा अश्व को लाक्षणिक रूप में प्रस्तुत किया है जो समय काल और उनके चित्र के मुख्य पात्र इनायत खाँ की मनः स्थिति को प्रकट करता है। इनके अतिरिक्त गोगी सरोज पाल, गणेश पाइन, जोगेन चौधरी, रिनी धूमल, अंजू चौधरी, गुलाम मोहम्मद शेख, मनु पारेख आदि कलाकारों ने इन विषयों पर अपनी तूलिका चलाई है। इन आकृतियों में पंखदार घोड़े, पंखदार हाथी, नर व नारी मुखाकृति, पक्षी आकृति के साथ, पंखदार मनुष्य आकृति, पशु–नर व नारी मिश्रित आकृतियाँ व जलचर जैसी पौराणिक आकृतियाँ सम्मलित है।

भारतीय पौराणिक कथानकों में किन्नर–किन्नरी व गन्धर्वों की अवधारणा प्रदर्शित है जो स्वर्ग के संगीतज्ञों के रूप में जाने जाते है और विभिन्न देवी–देवता के परिचायक वर्ग में इनको रखा जाता है। इनका आधा शरीर पक्षी का व आधा शरीर मानव का निर्मित है। गोगी सरोज पाल ने इस प्रकार के आकारो को चित्रित किया है जिसके माध्यम से उनका **मुख्य** ध्येय स्त्री जीवन को प्राप्त नयी स्वतन्त्रता, स्वच्छन्दता को चित्रित करना है। गणेश पाइन द्वारा चित्रित चित्र 'द क्रीएचर' में भी पक्षी युक्त मानव की रहस्यमयी आकृति चित्रित है।

कामधेनू , रिनी धूमल कामधेनू ,गोगी सरोज पाल

भारतीय पौराणिक विचारधारा में कामधेनू एक इच्छापूर्ण करने वाली शक्ति के रूप में पूजनीय है जिसका अंकन गोगी सरोजपाल की कृतियों में प्राप्त होता है जिसमें सौम्य, गौरवर्ण,

गौरवशाली रूप में इसको चित्रित किया गया है जो स्त्रीत्व की शक्ति का द्योतक माना जा सकता है। यह सभी रूप भारतीय पुराणों व प्राचीन वेदों में वर्णित है जिनके महत्व को कलाकारों ने अपने कलाकृतियों द्वारा प्रचारित किया है।

निष्कर्ष स्वरूप मैं यह कहना चाहूँगी कि–भारतीय चित्रण शैली की अन्नत परम्परा में भारतीय तत्त्व दर्शन, हमारी आनन्ददायनी संस्कृतियाँ (वैदिक, पुराण, महाकाव्य कालीन) इन सबका सुरुचिपूर्ण अंकन प्राप्त होता है। कलाकार ने अपनी सृजनशीलता से इन अमूर्त तत्त्वों की पूर्णता के साथ व्याख्या की है, जिन्हें व्यक्त करने हेतु एक साहित्यकार को अनेक भागों में लेखन कार्य करना होगा उस तत्त्व की व्याख्या कलाकारों ने चित्रों के माध्यम से सरलतापूर्ण ग्राहय बना दी। यह चित्र हमारी संस्कृति की धरोहर के रूप में सदा हमें प्रेरित एवं आनन्द प्रदान करते रहेगें।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. Krishnamurthy, K., 1984, Mythical animal in in Indian Art, Published, by Abhina Publications.
2. Dr. Daljeet and Prof. Jain, P.C, 2006, Indian Miniature Painting, Manefestation of a creative mind, Published, by Brijbasi art Press Ltd..
3. Zimmer, Heinrich, 2017, Myths and Symbols in Indian Art and Civilization, Publish by Princeton University Press.
4. Coomaraswamy, K.,Ananda, and Vatsyayan, Kapila, 1995, The Transformation of Nature in Art, Indira Gandhi National Centre for the Arts, Sterling Publishers Pvt. Ltd.
5. Chakravarty, K.K, 2009, Text and Variations of the mahabharata: contextual, Regional and perfor nature Traditions, samikshika Series No. 2, National Mission for Manuscripts, GNCA, New Delhi.
6. Godine, David R., From Gaia to selfish Genes : Selected writings in the Life Science, Chapter-5, Krishna the divine lover, Publisher Inc.,Boston.
7. https//:www.Rarebooksocietyofindia, A Universal form of Krishna, 1835, The Metropolitan Museum of Art, Rare book Society of India.
8. Sharma, T.R., 2004, Reflection and Variations on the Mahabharata, Sahitya Academi, New Delhi.
9. डा. गुप्त, जगदीश, 1960, प्रगैतिहासिक भारतीय चित्रकला, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली,